Short Title BHAIRAVA-PRATISTHA-VIDHI

NEPAL-GERMAN MANUSCRIPT PRESERVATION Place of Deposit: REMA KARMACARMPrivate: ETMITTHIBH NA LA Manuscript No.

TITLE (acc. to Colophon Catalogus) !

1. ATHA BHAIRAVA- PRATISTEA-VIDHI ESICT

2. ITI 'SAF BHAIRAVA PRATISTA VIDMI SAMPURNNAM (SIC)

AUTHOR:

Compl. Size in cm : 24 .9 x 8.2 Reel No. 1 . 23 Remarks : paper - Thysasphn palm leaf, damaged by worms rate water - amoke-breaking Colour slide : No. SCRIBED: JAYATARAJA

Date : NS, VS, Shaks-

र् नम्ला स्वाया स्थार्वव प्रति स्विति ।। दित्र य स्वाय म् याया है भूद्र द्र तय मान, ज्ञा वा में १ ल् रियाय है जा न याया निक्त में या या है । हिंद य से ले साथ पर दिल् वा या यह मान में स्वाया । विद्य से ले साथ पर दिल् वा या यह मान में स्वाया । विद्य से ले साथ पर दिल् वा या यह मान से साथ पर के साथ पर का साथ पर के साथ

क्रवित्यद्व ग्रम्याग्रिस्त्व निर्ण क्रियं क्रियं निर्ण क्रियं निर्ण क्रियं निर्ण क्रियं निर्ण क्रियं निर्ण क्रियं निर्ण क्रियं क्रियं निर्ण क्रियं क्

बायाय व दिन्दि वयिष्ठ जार्किना त्यादि॥विकिविस् के नाम क्षेत्र सात्य आक्ष स्विक्ष था। व ता क्षा नत्व प्रमाभ ने ॥क्षेत्र हिंहा क्षा नाम क्षा नत्व प्रमाभ ने ॥क्षेत्र स्व क्षा नाम क्षा नाम क्षेत्र स्व य क्षा ने स्व क्षा नाम क्षा ना

नहाचाम् विवायद्वनम्यविनहाय॥यमवाम् नम्छन् स्वाय॥द्यम् हिन्तः याद्वाण्डम्बनिक्षवनाक्षय्वक्राः आदिक्षाम् हिनिद्वा॥र्ङ्कानिक्षवनाक्षय्वक्राः स्वायक्षित्रम्हिनिद्वा॥र्ङ्कानिक्षवनाक्षय्वक्राः स्वायक्षित्रम्क्रियः॥विद्यक्रम् नद्वाण्डक्षयः स्वायक्ष्याः स्वायक्ष्यः स्वयक्ष्यः स्वयक्षः स्वयक्षः स्वयक्ष्यः स्वयक्षः स्वयक्यः स्वयक्षः स्वयक्यः स्वयक्षः स्वयक्षः स्वयक्षः स्वयक्षः स्वयक्षः स्वयक् वा । स्वयन तममयनि त क्वा स्क्रुम्य व संस्था स्वर्णि स्वादि। इहें स्वयं क्षेक्रियाद्व वर्षि। व्हित्र विश्व अन्ताः। तमा सिम्बलिक् यः जा । चाम्नि व ज्ञास्य ज्ञागवलिंद्व राम नायरे। व तो ह्या सायरे। के अभिविक्ष्यरेश के अहें हें सिवायरे। कें ब्रम्भय कदयरे। कें ब्रम्भय निवस्ति। कें कें ब्रम्भय निवस्ति यारे क्षेत्र यारे कें ब्रम्भय कदवाय कें। कें कें ब्रम्भय ने व्याययोग का के कें ब्रम्भय स्टान्य प्रयोग ज्ञाचा भागी का कुंद्र स्वर्णि विश्व क्या क्षीदेश क्रम्भविष्ठ कें ब्रम्भय

क्षाय विद्यान यात्राम के स्व विद्यानाय शाकि स्व व स्व य शाल्य यात्र व त्व त हायम के लय थिविशाश्विध स्वाभाशाश्चर लाकाय शाय स्व त्वा का य शाय क्षित क त्वा का लाय शाक्ष कि क ला द्वा लाय शाश्चर के बाल जाय शान दिन शाल वा शाय महाकाः लाय शाश्व वा श्वा शास वा य शाश्व का य गाय शाश्चर मृत्य शाश्चर विनाय शाय यात्र महा के येया लाय शाश्चिक का निविधिशाश्चर कि वा स्व शाश्व की शाश्य की शाश्च्यों के कि की निविधिशाश्चर कि वा की शाश्य की शास की शाश्य की शास की मयायर॥रम्मेवायर॥द्वीयर॥रनक्षेत्रेशायकैष्ट्रबायर॥रपक्षवायर॥म्म्र दयराभ्भवायर॥दवक्कीयर॥पनाकार॥ॐ लॉलील्यं क् दायर॥व द नादिदि॥वित हरूककृषपाल्यवित्रद्धारसात्राजाय॥दो स्म्राव॥ॐ महावियामहाका यद्वयक्तिमदागाली॥विषयायहानामहि म्बेदिवनमस्त्रन॥यह्नविदय अ नामाय.रखेदालककान्य॥ज्ञामह्नर्गवन्व न्कृद्धक्त्यामप्तकामार दानायवित्ययानम्बायमद्वायम् ॥ध्वायविष्य॥ॐ स्य स्य स्वकृतविक्रित

यः स्वीपद्कविभविदवर्गावनदिव्वक्षितं र न्यु सर्वे नक्षित् क्षेत्रक्ष स्विदित्यः क्षि वर्वे द्वा नाच निविधानका भिवं कि उप्तर्ग । उप्रभाति नका क्षिक त्स् अप्रभातन क्षिवकत् स्वातक ॥ अप्रवाक न स्विपाल व्याव न स्वयक्ष वाक्ष स्वात्व । भा का लाक्ष या त्या स्वा स्वक्ष न भी स्वाव क्षेत्र ती त्यु स्वाय व्यय स्वाद ता स्व क्ष्र स्विधिक क्षि वाक्ष या ॥ उद्ध्वा स्वत स्विव क्षित्र क्षेत्र । ये क्ष्र स्व क्ष्र क्षेत्र विश्व स्वाय । स्वाय क्रिंशित्रश्वावन्य त्रांशित्रविष्ठ्र न्यां दिश्वीष्ट्रमायम्हितादवः भिवनि मे श्वायम् विष्ठित्रायम् विष्ठित्रायम् योष्ट्रित्रिश्चाम् यानार्द्दे न्यं रम्य प्रमावित्राम् वाद्वास्त्रास्त्र क्रित्रवित्रम् विश्वयम् विश्वयम्यम् विश्वयम् विश्वयम्यम् विश्वयम् विश्वयम्यम् विश्वयम् विश्वयम्यम् विश्वयम् विश्वयम् विश्वयम् विश्वयम् विश्वयम् विष्ययम् विष्ययम

मिष्वित्ववित्ववावन्यवित्वावन्यवित्वावन्य द्वार्गाराण्डे कृष्या स्वभव्य कृष्य वित्वावित्रा वनाम्यान्य वित्व कृष्य वित्वित्व कृष्टि द्वागण्य वित्व कृष्य द्वार्भवित्व वित्र कृष्य गर्म व्याप्त्र विश्व कृष्य वित्व कृष्य व्याप्त विश्व क्ष्य प्रतित्व अप ननाम प्रथम व्याप्त वित्य व्याप्त विश्व कृष्य वित्व कृष्य वित्य क्ष्य विश्व क्षय विश्व क्षय विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व विश्व विश्व विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व क्षय विश्व विश्व विश्व विश्व क्ष्य क्षय

अनकायनमाविताकापासुति॥०० डि ६ स्वयति ख्रिय्व के हस्य स्वता स्वय भाषियादव तस्ति व् रायमनमा व्हिताका वर्षा द्विति । ॥ प्रथम ने से त्रयं जा। माराज्याता अक्षता अक्षत्र हाकायं प्रीत्व वर्ष्ट्र महा क्षेण्य ग्राव्यक्त महावि भाज्या द्वित् व राजाविया के रसे सी स्वर्ग वाचा य राज्य द्वित्र व्याप्त व्याप्त व्याप्त विवाद जाया। स्वता माराज्यका महावी न सन्भावक या वित्र । तिर्वि वृति हो न र्रो माराज्य न भारता व्वता विवाद विराद वाविति॥ ॥ प्रथम न्या त्र व्याप्त नामा व्याप्त स्व

मन्द्रितं मक्ष मालास्य क्ष का। क्लातदिग स्स्य ग्रेन्स् क्षेथाया। क्षेत्री स्थायता। क्षेत्री स्थायता।

यात्रभवित्रीमितयुष्ठदेव नीदयो,याधित्रकितथापुर्वे । १० विद्याम । १३४५ वर्षे । वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे । वर्षे वर्ये वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे

प्रवादायप्राय्वयप्रवाद्यादि॥ ई के दी के स्वादियाय क्ष्यायप्राय्वयादिः दवन्य गर्भे के के कि स्वाद्य प्राय्य प्राय्य माध्य विन्द्र वाद्यं अन्यतिविनान्यत्॥ यक्॥ वेष्रम्म किर्मरम्पना व्यस्माण्याम् विन्यस्य अन्यतिविनान्यत्॥ यक्ष्ययाय व्यस्य क्ष्यस्य व्यस्य व्यस्य विर्मरम्पना व्यस्य व्यस्य व्यस्य व्यस्य विर्मय विरम्भ विरम

मक्षाकारकापद्मामस्यद्मान्यवपाताम् तिकार्ङ सँबक्षायशर्क सँबज्ञक्राशा कैंतें संबिध्येशक माँकों तक्ष्यें याव न नीक्षावितारमम्यति। र्ङ्भगानातायशावामस्या म्यानाम स्ट्रमाञ्ह भाना। तत्राम्ह स्तित्य जा। भिवना त्यानमा मृद्यां च एक मीभ सौरामानायशावनाक्ष्या। नेक्ष्यें याम् भ्रमीयाम् मानाप्रवेनाक्ष्याम् मेन्स्ये म्यानाव्य स्टिश्च के केविव केविव केविव स्टिश्च स्वाप्ति। म्रिस्य स्वाप्ति। केविव स्वाप्ति। केवि द्वीदिक्भाताक्ष्यव्यार्क्ष्यंहक्षक्षयवायशक्षिय्वाकुष्रिव्या।भ्रिवि द्वाम्बानाम्बलाना चक्ष्यदास्त्रिम्पाभ्यमास्वनास्वर्वाक्षयार्थवत्युष्ठयत्रयार्थेव स्वयः। तंत्रीयग्रवेकाल्यः। भंकन्यिकस्त्रीयार्थवन्यव्यार्थेवत्युष्ठयार्थेवार्येवार्थेवार्थेवार्थेवार्थेवार्थेवार्थेवार्थेवार्थेवार्थेवार्थेवार्थेवार्थेवार्येवार्थेवार्थेवार्थेवार्थेवार्येवार्थेवार्येवार्येवार्थेवार्येवार्थेवार्थेवार्येवार्येवार्थेवार्येवार्थेवार्थेवार्येवार्येवार्थेवार्येव

स्व जी या जिति॥ह सिदि॥म् वा क्ष म् डा । थ्या दा व जा य स्व ति । ए द्वे स्म म वादि॥ इति स्व ति स्य जा ॥ ॥ व व क स्र म भी या वा ॥ इक स्व वा स्म भ न ॥ म्य स्व लि स्म म न म न स्व या के न ॥ म क क स्य म म स्व ति स्व ति । स्व क ते म स्व वि स्व ति स्व वि स्व ति स्व वि स्व ति । स्व व ते म स्व

तिवय्नते॥(अन्यस्त्राक्तिवन्स्र) तिवय्सायं त्यान्ति। विवय्नते॥(अ॥वस्त्रास्ति॥ यमाहति व्यक्ति। व्यव्यक्ति व्यक्तिवन्स्र तिविव्यायः विवयः व्यव्यक्ति। व्यक्ति व्यक्ति। व्यव्यक्ति। व्यव्यक्ति।

म्बर्भात्रम् त्राप्त्रम् स्वाप्त्रम् त्राप्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम्यस्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम्यम् स्वाप्त्रम् स

वमस्ययान्यस्व बाल्यिम् थकाल्य स्यायवस्वाया। ज्ञिन् सुप्रवेष राज्यो श्र द्वत्य स्त्र लगानायाल्य स्यावचनाय वस्य कानवियकवचना म् लन्या मादिति का कल्य स्थाय स्थाय स्थाय कावचना विवाद स्थाप त्र मुद्दे ति स्वाया। का स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप या।यातिकः स् ना।हदयतम्हित्वययद्भागा।याजानस्हित्।। त्रकाकवयतम्हित्। गर्गाभानस्हित्।मर्गाभातः हदयतमस्हित्।यद्यवति। तस्हित्।।याज्ञ स्वा नयतिश्वात्रस्हितः। यात्रका स्ववचनस्रहितः।।यात्रस्य स्वविद्यया।वस्तुः ११ विवातकन। यमस्ति। यात्रस्य स्वायत्रस्य हिता।। त्रित्वः स्वतः स्वतः स्वायत्रस्य स्वयत्रस्य स्वयत्रस्य स्वयत् स्वयत् स्वयत्रस्य स्वयत् स्ययत् स्वयत् स्वयत्य स्वयत् स्वयत् स्वयत् स्वयत् स्वयत् स्वयत् स्वयत् स्वयत्यस्य स्वयत् स्वयत्यस्य स्वय

स्य स्वाम्यिति स्वाय सिव्यानम् स्वाम्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वाम्य स्वाम्

सकास्त्रवायशाई हं स्वस्त्र त्वाभिप्रयस्ति विवायशाववासी व त्या । प्रदिर्ण द्वित वव व्ययशाई दें विवत वाभिप्रयस्ति वायशाह दि। हुं दें विवात वायशाह दें विवात वायशाह दें विवात वाभिप्रयस्त्र विवाय विभित्येयां वयित्वा । वा स्वा कि स्व श्वा स्व म से के से बखा हा स्व म से से खात स्व म से से खात स्व म से से से खात स्व म से से खात से ख

त्यमाश्नक्रा। उं क्रांयित स्वासियय्ग्र, श्रस्वा रूल स्विना स्विपाय विति स्कृता स्वामार्थ वर्द्धताय त्य त्या स्विन व्या स्वाम क्रिय स्वाम त्या विविद्या महत्व स्वाना त्या स्वाम मन्तिरारच्यिकार्शक्तिः।। यद्य प्रहिकालक्षिरा र वाष्ट्र न व्या र विकासक्षिरा र किंध र विकासक्षिरा व्या प्रकार विकासक्षिरा विकासक्षिर विकास विकासक्षिर विकास वितास विकास वित